



प्राकृतिक खेती: आधुनिक कृषि की आवश्यकता

डॉ. पार्वती दीवान¹, डॉ. राजहंस वर्मा², डॉ. प्रेरणा डोगरा² एवं सुरेश कुमार फगोडिया²

¹सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, कोटपुतली, जयपुर, राजस्थान

²मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान

परिचय

आधुनिक कृषि पद्धतियों ने पिछले कुछ दशकों में खेती के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और मशीनों के व्यापक उपयोग ने फसलों की उपज को बढ़ाने में मदद तो की है, लेकिन इसका दीर्घकालिक प्रभाव न केवल पर्यावरण बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी गहरा और हानिकारक पड़ा है। अत्यधिक रसायनों के उपयोग ने मिट्टी की उर्वरता घटा दी है, जल स्रोतों को दूषित किया है, और जैव विविधता को नुकसान पहुंचाया है। इस स्थिति ने किसानों को भी आर्थिक रूप से प्रभावित किया है, क्योंकि उन्हें महंगे रासायनिक उत्पादों और तकनीकी संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे समय में जब पारंपरिक कृषि संकट में है, प्राकृतिक खेती एक समाधान के रूप में उभर रही है। प्राकृतिक खेती वह कृषि पद्धति है जिसमें बिना किसी रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक या जनरेटिकली मॉडिफाइड (GM) बीजों का उपयोग किए खेती की जाती है। इस पद्धति में पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल किया जाता है और यह प्रकृति के नियमों के साथ तालमेल बिठाते हुए कृषि को आगे बढ़ाने पर आधारित है। प्राकृतिक खेती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को बनाए रखती है। इसके लिए किसी बाहरी रसायन की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि जैविक अवशेषों, गोबर की खाद, हरी खाद और फसल अवशेषों का उपयोग करके मिट्टी

की गुणवत्ता को सुधारा जाता है। इसके अतिरिक्त, इस विधि में कीटनाशकों के स्थान पर प्राकृतिक कीट नियंत्रण उपाय अपनाए जाते हैं, जैसे कि नीम का तेल या जैविक घोल, जो कीटों को नष्ट करने में सहायक होते हैं और पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। प्राकृतिक खेती के लाभ सिर्फ पर्यावरणीय संरक्षण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी फायदेमंद है। इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं होने के कारण किसानों की लागत कम हो जाती है। इसके अलावा, प्राकृतिक खेती के उत्पाद स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और पोषक होते हैं, जो बाजार में बेहतर दाम पर बिकते हैं, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है। इस पद्धति का एक और महत्वपूर्ण पहलू है कि यह जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक है। प्राकृतिक खेती में जल का कम उपयोग होता है और मिट्टी की जल धारण क्षमता में सुधार होता है, जिससे पानी की बर्बादी कम होती है। इसके साथ ही, यह विधि जैव विविधता को बढ़ावा देती है, जिससे फसलें जलवायु के प्रति अधिक सहनशील होती हैं। आज, जब आधुनिक कृषि पद्धतियों के नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट हो रहे हैं, प्राकृतिक खेती को अपनाना समय की आवश्यकता है। यह न केवल कृषि को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से स्थायी बनाती है, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाती है।

प्राकृतिक खेती: आधुनिक कृषि की आवश्यकता

कृषि प्राचीन समय से ही मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रही है। यह न केवल भोजन उत्पादन का मुख्य स्रोत है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन आज की आधुनिक कृषि पद्धतियां, जो रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और हानिकारक तकनीकों पर आधारित हैं,

न केवल पर्यावरण को हानि पहुंचा रही हैं बल्कि मिट्टी की उर्वरता, जल स्रोतों और किसानों की आजीविका को भी संकट में डाल रही हैं। इसी चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में प्राकृतिक खेती एक समाधान के रूप में उभर रही है। यह एक ऐसी पद्धति है, जो पर्यावरण को संतुलित रखते हुए स्वस्थ और टिकाऊ कृषि की ओर ले जाती है।

प्राकृतिक खेती क्या है?

प्राकृतिक खेती (Natural Farming) वह कृषि पद्धति है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए, बिना किसी रासायनिक

उर्वरक, कीटनाशक या जनरेटिकली मॉडिफाइड (GM) बीजों का उपयोग किए खेती की जाती है। यह पद्धति पूरी तरह से पर्यावरण



पर आधारित है और इसका लक्ष्य है कि कृषि की प्रक्रिया को प्रकृति के साथ समन्वित किया जाए, न कि उसके खिलाफ। संसाधनों का उपयोग किया जाता है। यह खेती की एक स्वावलंबी प्रणाली है, जो मिट्टी की गुणवत्ता और जैव विविधता को बढ़ावा देती है।

प्राकृतिक खेती के चार स्तंभ

प्राकृतिक खेती एक ऐसा कृषि दृष्टिकोण है जो पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों और प्रक्रियाओं पर आधारित है। यह पद्धति आधुनिक रासायनिक कृषि की विधियों से भिन्न है, और इसके सिद्धांत पर्यावरणीय स्थिरता, मिट्टी की उर्वरता, और स्वस्थ खाद्य उत्पादन पर आधारित हैं। यहां प्राकृतिक खेती के प्रमुख सिद्धांतों की विस्तृत चर्चा की गई है: प्राकृतिक खेती के चार प्रमुख सिद्धांत हैं, जिन्हें अपनाकर किसान इस विधि को सफलतापूर्वक लागू कर सकते हैं:

1. **मिट्टी की स्वाभाविक उर्वरता का उपयोग:** प्राकृतिक खेती में माना जाता है कि मिट्टी में पहले से ही स्वाभाविक रूप से पोषक तत्व मौजूद होते हैं और इसे उर्वरकों या रसायनों की आवश्यकता नहीं है। इस खेती में जैविक पदार्थों, जैसे कि गोबर, पत्तियाँ और अन्य प्राकृतिक अवशेषों का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखा जाता है। इससे मिट्टी की जैविक गतिविधि में सुधार होता है और यह अधिक स्वस्थ और स्थायी रहती है।
2. **रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का बहिष्कार:** रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक मिट्टी और पर्यावरण के

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

आधुनिक युग में जब कृषि को एक नई दिशा देने की आवश्यकता है, प्राकृतिक खेती एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में उभर रही है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया है, बल्कि मानव स्वास्थ्य और कृषि की स्थिरता को भी खतरे में डाला है। इस संदर्भ में, प्राकृतिक खेती की आवश्यकता को समझना और अपनाना समय की महत्वपूर्ण मांग है। यहाँ पर प्राकृतिक खेती की आवश्यकता के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है:

1. **मिट्टी की गिरती गुणवत्ता:** आधुनिक कृषि पद्धतियों ने मिट्टी की गुणवत्ता पर गंभीर प्रभाव डाला है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की जैविक गतिविधियाँ कम हो गई हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता में

प्राकृतिक खेती में मुख्यतः जैविक खाद, हरी खाद, गोबर की खाद, फसल अवशेषों और स्थानीय

लिए हानिकारक होते हैं। प्राकृतिक खेती में इनका उपयोग पूरी तरह से प्रतिबंधित है। इसके स्थान पर किसान जैविक खाद और प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। यह न केवल खेती को सस्ता बनाता है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन भी बनाए रखता है।

3. **फसलों का विविधिकरण और अंतरफसल प्रणाली:** प्राकृतिक खेती में एक ही भूमि पर कई प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। यह प्रणाली भूमि की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करती है और कीटों तथा बीमारियों से बचाव करती है। उदाहरण के लिए, धान के साथ दलहन या तिलहन उगाने से मिट्टी में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और मिट्टी की संरचना में सुधार होता है।
4. **प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग:** प्राकृतिक खेती में प्रकृति के संसाधनों का सही तरीके से उपयोग किया जाता है। इसमें वर्षा जल संचयन, जैविक खाद का निर्माण, फसल अवशेषों का पुनर्चक्रण और स्थानीय बीजों का उपयोग किया जाता है। इससे किसान अपनी भूमि की उत्पादकता और स्थिरता को बढ़ा सकते हैं।

कमी आ रही है। प्राकृतिक खेती में, जैविक खाद और हरी खाद का उपयोग करके मिट्टी की स्वाभाविक उर्वरता को बनाए रखा जाता है। इसके अंतर्गत, गोबर, फसल अवशेष और अन्य प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करके मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार किया जाता है। इससे मिट्टी की संरचना बेहतर होती है और यह लंबे समय तक उर्वर बनी रहती है।

2. **जल संकट का समाधान:** जल संकट एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। रासायनिक खेती में अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है, जिससे जल स्रोतों पर दबाव बढ़ जाता है। प्राकृतिक खेती में जल का कुशल उपयोग किया जाता है, और मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाने के लिए विभिन्न उपाय किए जाते हैं। इसमें वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण



और सूक्ष्म सिंचाई की विधियाँ शामिल हैं। इन तरीकों से पानी की बर्बादी कम होती है और जल संकट से निपटने में मदद मिलती है।

3. **स्वास्थ्य समस्याएँ और खाद्य सुरक्षा:** रासायनिक खेती से उत्पन्न खाद्य पदार्थों में हानिकारक रसायन होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकते हैं। इन रसायनों के सेवन से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे कि कैंसर, हार्मोनल असंतुलन, और अन्य बीमारियाँ। प्राकृतिक खेती से प्राप्त खाद्य पदार्थ रसायनों से मुक्त होते हैं और अधिक पोषक होते हैं। इससे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है और लोगों की सेहत में सुधार होता है।
4. **आर्थिक स्थिरता और किसानों की स्थिति:** आधुनिक खेती की लागत में वृद्धि हो रही है, जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और मशीनरी की उच्च लागत शामिल है। प्राकृतिक खेती में, इन महंगे रसायनों और संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती, जिससे किसान की लागत कम होती है। इसके अतिरिक्त, प्राकृतिक खेती किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है, क्योंकि वे अपनी कृषि प्रणाली को स्वावलंबी बना सकते हैं। यह आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देती है और किसानों की आजीविका को सुधारती है।
5. **जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ:** जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ कृषि के लिए एक बड़ा

खतरा बन चुकी हैं। रासायनिक खेती जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को और बढ़ा सकती है, जैसे कि मिट्टी की कटाव, सूखा और बाढ़। प्राकृतिक खेती, अपने जैविक तरीकों से, मिट्टी की संरचना को मजबूत करती है और फसलों को जलवायु के बदलावों के प्रति अधिक सहनशील बनाती है। यह विधि भूमि के प्राकृतिक तंत्र को संरक्षित करती है और प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करती है।

6. **जैव विविधता का संरक्षण:** प्राकृतिक खेती में फसलों की विविधता और अंतरफसल प्रणाली को अपनाया जाता है, जिससे भूमि में जैव विविधता बनी रहती है। एक ही भूमि पर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने से मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि होती है और कीटों तथा बीमारियों से बचाव होता है। इसके परिणामस्वरूप, पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है और प्राकृतिक जीवन के विविध रूपों को संरक्षित किया जा सकता है।
7. **दीर्घकालिक स्थिरता:** प्राकृतिक खेती दीर्घकालिक स्थिरता प्रदान करती है। इसके विधियाँ और संसाधन पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ होते हैं और इनका प्रभाव दीर्घकालिक होता है। प्राकृतिक खेती के माध्यम से, हम एक ऐसा कृषि तंत्र विकसित कर सकते हैं जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी उपयुक्त और स्थिर हो।

प्राकृतिक खेती के लाभ

प्राकृतिक खेती एक ऐसी पद्धति है जो पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करती है और रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और जेनेटिकली मॉडिफाइड (GM) बीजों से बचती है। यह पद्धति मिट्टी, जल, और पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखते हुए खेती करती है। प्राकृतिक खेती के अनेक लाभ हैं जो इसे आधुनिक कृषि पद्धतियों से अलग बनाते हैं। यहाँ पर प्राकृतिक खेती के प्रमुख लाभों की विस्तृत चर्चा की गई है:

1. **पर्यावरण संरक्षण:** प्राकृतिक खेती पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करती है। इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता, जिससे भूमि, जल स्रोत और वायु प्रदूषण की समस्याओं को कम किया जा सकता है। प्राकृतिक खाद और कीटनाशक जैसे नीम का तेल, जैविक

घोल आदि का उपयोग करने से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। इससे भूमि की गुणवत्ता बेहतर रहती है और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को भी कम किया जा सकता है।

2. **मिट्टी की उर्वरता में सुधार:** प्राकृतिक खेती में मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए जैविक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। गोबर की खाद, हरी खाद, और फसल अवशेषों का प्रयोग करके मिट्टी की जैविक संरचना को सुधारा जाता है। यह न केवल मिट्टी को अधिक पोषक तत्व प्रदान करता है, बल्कि मिट्टी की जल धारण क्षमता को भी बढ़ाता है। परिणामस्वरूप, मिट्टी लंबे समय तक उर्वर रहती है और फसल की उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है।
3. **स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ:** प्राकृतिक खेती से प्राप्त खाद्य पदार्थ रसायनों और हानिकारक तत्वों से मुक्त होते हैं।



रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बिना उगाई गई फसलें अधिक पोषक और स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। इनमें किसी भी प्रकार के हानिकारक रसायनों का प्रयोग न होने के कारण, ये खाद्य पदार्थ मानव स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित होते हैं। इससे खाद्य पदार्थों के सेवन से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना कम होती है।

4. **जल प्रबंधन में सुधार:** प्राकृतिक खेती में जल का कुशल उपयोग किया जाता है। इस पद्धति में मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाने के उपाय किए जाते हैं, जैसे कि जल संचयन और वर्षा जल का पुनः उपयोग। इससे पानी की बर्बादी कम होती है और जल संकट को कम किया जा सकता है। प्राकृतिक खेती में मिट्टी के बेहतर प्रबंधन के कारण फसलों की वृद्धि में पानी की आवश्यकता भी कम होती है।
5. **कृषि लागत में कमी:** प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं होती, जिससे खेती की लागत कम होती है। किसान को बाहरी संसाधनों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, जिससे लागत की बचत होती है। इसके अलावा, प्राकृतिक खेती में उपयोग की जाने वाली विधियाँ और संसाधन स्थानीय होते हैं, जिससे परिवहन लागत भी कम होती है।
6. **जैव विविधता का संरक्षण:** प्राकृतिक खेती में फसलों की विविधता और अंतरफसल प्रणाली को अपनाया जाता है। यह भूमि में जैव विविधता को बढ़ावा देती है और कीटों और

बीमारियों से निपटने में मदद करती है। विविध फसलें मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती हैं और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित करती हैं। इससे पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है और विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और जीवों की रक्षा होती है।

7. **किसानों की आत्मनिर्भरता:** प्राकृतिक खेती किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है। इसमें बाहरी रसायनों और संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती, जिससे किसान अपनी कृषि प्रणाली को स्वावलंबी बना सकते हैं। यह उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करती है और उनकी आजीविका को स्थिर बनाती है। प्राकृतिक खेती से किसान अपनी कृषि प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं और अपनी भूमि के प्रति अधिक जिम्मेदार बन सकते हैं।
8. **जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का मुकाबला:** प्राकृतिक खेती जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में सहायक हो सकती है। यह पद्धति मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखती है और जलवायु की बदलती स्थितियों के प्रति फसलों को अधिक सहनशील बनाती है। जैविक खाद और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि मानव स्वास्थ्य और किसानों के लिए भी एक महत्वपूर्ण समाधान है। यह एक स्थायी कृषि पद्धति है जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए भूमि और संसाधनों को सुरक्षित रखने में मदद करती है। आज जब जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की उर्वरता की कमी और जल संकट जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं, प्राकृतिक खेती को अपनाना न केवल

एक विकल्प है, बल्कि यह समय की मांग भी है। इसलिए, सरकार, किसान और समाज के सभी वर्गों को मिलकर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना चाहिए। इससे न केवल हमारी धरती स्वस्थ और हरी-भरी रहेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस धरती पर सुरक्षित और समृद्ध जीवन जी सकेंगी।